The Infinite
An International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 1 | Issue 2 | September 2024
ISSN: 3048-9539 (Online)
Website: www.theinfinite.co.in

श्री रामचरित मानस एवं आदर्श राज्य की संकल्पनाः एक अध्ययन

साक्षी पाण्डेय

बी०ए०तृतीय वर्ष

एम०डी०पी०जी०कॉलेज, प्रतापगढ़, उ०प्र०

सारांश

मुख्य बिंदु.

श्री रामचरित मानस,रामराज्य,आदर्श राज्य, धर्म,न्याय,शासन प्रणाली।

श्री रामचरित मानस तुलसीदास द्वारा रचित एक अद्वितीय महाकाव्य है, जिसमें न केवल राम के जीवन का चित्रण किया गया है, बल्कि आदर्श राज्य की संकल्पना भी प्रस्तुत की गई है। यह ग्रंथ भारतीय समाज में नैतिकता, धर्म और कर्तव्य की परिभाषा को संजीवनी प्रदान करता है। रामराज्य की संकल्पना को समाज के हर वर्ग के लिए न्याय, समानता, और शांति का प्रतीक माना जाता है। इस अध्ययन में श्री रामचरित मानस में उल्लिखित आदर्श राज्य के प्रमुख तत्वों जैसे धर्म, न्याय, और शासन प्रणाली का गहन विश्लेषण किया गया है। इसके साथ ही, इसे आधुनिक राज्य व्यवस्था और लोकतांत्रिक मूल्यों के संदर्भ में समझने का प्रयास किया गया है। तुलसीदास द्वारा प्रस्तुत रामराज्य की परिकल्पना आज भी एक आदर्श शासन व्यवस्था के रूप में देखी जाती है, जो शासक और प्रजा के बीच सौहार्दपूर्ण और न्यायसंगत संबंधों की स्थापना पर आधारित है।

परिचय

श्री रामचरित मानस गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित एक प्रसिद्ध महाकाव्य है, जिसे भारतीय साहित्य और संस्कृति में अत्यधिक आदर और श्रद्धा के साथ देखा जाता है। यह ग्रंथ संस्कृत रामायण पर आधारित है, जिसे महर्षि वाल्मीकि ने लिखा था, लेकिन तुलसीदास ने इसे अवधी भाषा में लिखा, जिससे यह भारतीय समाज के सभी वर्गों के लिए सुलभ और लोकप्रिय हो गया।गोस्वामी तुलसीदास का जन्म 16वीं शताब्दी में उत्तर प्रदेश के राजापुर नामक गांव में हुआ था। उनकी जन्मतिथि को लेकर विभिन्न मत हैं, लेकिन प्रमुख रूप से यह माना जाता है कि वे संवत 1554

(1532 ई.) में जन्मे थे। उनके पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। बाल्यकाल में ही माता–पिता का साया उनके सिर से उठ गया था, जिससे उनका जीवन प्रारंभिक दौर में संघर्षपूर्ण रहा। उनका पालन–पोषण उनके गुरु नरहरिदास ने किया, जिन्होंने उन्हें भगवान राम के प्रति अनन्य भक्ति का मार्ग दिखाया।

तुलसीदास बचपन से ही विद्वान थे। वे संस्कृत और हिंदी भाषाओं में अत्यंत निपुण थे। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा काशी में प्राप्त की, जहाँ वे वेद, पुराण, उपनिषद, और अन्य धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करते हुए विद्वता हासिल की। यद्यपि तुलसीदास का विवाह रत्नावली नामक स्त्री से हुआ था, लेकिन पत्नी के प्रति अत्यधिक मोह ने उन्हें सांसारिक बंधनों से विमुख कर दिया। रत्नावली के एक कटाक्ष ने तुलसीदास को संसार की असारता का बोध कराया, और वे भगवान राम के प्रति पूर्ण समर्पित हो गए।

तुलसीदास ने अपने जीवन में अनेक तीर्थ यात्राएँ कीं और भगवान राम के विभिन्न रूपों का अनुभव किया। उन्होंने अपनी भक्ति और ज्ञान का प्रचार–प्रसार करते हुए कई महत्वपूर्ण रचनाएँ कीं, जिनमें ''रामचरितमानस'' उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध कृति है। इस महाकाव्य को अवधी भाषा में लिखा गया, जिससे यह साधारण जनता के लिए भी सुलभ हुआ। ''रामचरितमानस'' में तुलसीदास ने राम के जीवन को आदर्श रूप में प्रस्तुत किया और रामराज्य की संकल्पना को समाज के सामने रखा।

तुलसीदास ने रामचरितमानस के अलावा ''हनुमान चालीसा'', ''कवितावली'', ''विनयपत्रिका'', ''दोहावली'' जैसी महत्वपूर्ण रचनाएँ भी कीं। उनका जीवन एक आदर्श भक्त के रूप में प्रेरणा का स्रोत रहा है, जिसने भगवान राम के प्रति अपनी भक्ति को ही जीवन का ध्येय बनाया। उनका प्रभाव न केवल हिंदी साहित्य पर पड़ा, बल्कि भारतीय समाज और धर्म पर भी अमिट छाप छोड़ी।

तुलसीदास का निधन संवत 1680 (1623 ई.) में हुआ, लेकिन उनके द्वारा रचित साहित्यिक और धार्मिक कृतियों ने उन्हें अमर बना दिया। आज भी वे रामभक्ति के प्रतीक और भारतीय संस्कृति के महानतम संतों में से एक माने जाते हैं।

श्री रामचरित मानस की रचना 16वीं शताब्दी में हुई थी। इसे सात काण्डों (अध्यायों) में विभाजित किया गया है, जो क्रमशः भगवान राम के जीवन के विभिन्न चरणों को दर्शाते हैं। ये सात काण्ड इस प्रकार हैं:

1. बालकाण्डः राम के जन्म और बाल्यकाल का वर्णन।

2. अयोध्याकाण्डः राम के अयोध्या में जीवन, राज्य त्याग और वनवास की शुरुआत।

3. अरण्यकाण्डः राम, लक्ष्मण और सीता का वनवास, राक्षसों का संहार, और सीता का हरण।

4. किष्किन्धाकाण्डः राम की मित्रता हनुमान और सुग्रीव से, और वानर सेना का गठन।

5. सुन्दरकाण्डः हनुमान द्वारा सीता की खोज और लंका में राम का संदेश पहुँचाना।

6. लंकाकाण्डः राम–रावण युद्ध और रावण का वध।

7. उत्तरकाण्डः राम का अयोध्या लौटना, राज्याभिषेक और रामराज्य की स्थापना।

श्री रामचरित मानस का मुख्य उद्देश्य भगवान राम के जीवन और गुणों को चित्रित करना है, जिनमें धर्म, कर्तव्य, सत्य और मर्यादा का पालन प्रमुख है। तुलसीदास ने राम के जीवन को एक आदर्श पुरुष और राजा के रूप में प्रस्तुत किया है, जिन्हें ''मर्यादा पुरुषोत्तम'' कहा जाता है। यह महाकाव्य धार्मिक, नैतिक और सामाजिक शिक्षा का एक अद्वितीय स्रोत है।

श्री रामचरित मानस की भाषा सरल अवधी है, जो उस समय आम जनता की भाषा थी। इस कारण यह ग्रंथ न केवल विद्वानों बल्कि साधारण लोगों के बीच भी अत्यधिक लोकप्रिय हुआ। तुलसीदास ने इसमें लोकप्रचलित कहावतों, कथाओं और धार्मिक दृष्टांतों का प्रयोग कर इसे और भी प्रभावी बनाया।

महत्व

1. धार्मिकः श्री रामचरित मानस हिंदू धर्म में एक महत्वपूर्ण धार्मिक ग्रंथ है। इसे विशेष रूप से रामभक्तों के लिए मार्गदर्शक माना जाता है।

2. सांस्कृतिकः इस महाकाव्य ने भारतीय समाज और संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला है। रामलीला, जो राम के जीवन की घटनाओं पर आधारित नाटक है, इस ग्रंथ से प्रेरित होकर पूरे भारत में आयोजित की जाती है।

3. नैतिक और सामाजिक शिक्षाः रामचरित मानस में राम के जीवन के माध्यम से आदर्श मानव जीवन और समाज के सिद्धांतों को प्रस्तुत किया गया है। इसमें प्रेम, भक्ति, सत्य, धर्म, और कर्तव्य के महत्व को बड़े ही सरल और सजीव ढंग से समझाया गया है।

श्री रामचरित मानस न केवल एक धार्मिक ग्रंथ है, बल्कि यह भारतीय समाज के नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का प्रतीक भी है। तुलसीदास ने इसे रचकर रामायण को जन–जन तक पहुँचाया और इसे भारतीय संस्कृति का अमूल्य धरोहर बना दिया।

आदर्श राज्य की संकल्पना

आदर्श राज्य की संकल्पना एक ऐसी शासन व्यवस्था का विचार है जिसमें न्याय, धर्म, शांति, और समृद्धि का समन्वय हो। यह संकल्पना भारतीय दर्शन, पश्चिमी राजनीतिक विचारों, और धार्मिक ग्रंथों में विभिन्न रूपों में मिलती है। आदर्श राज्य वह होता है, जहाँ शासक और प्रजा के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध होते हैं, और शासन का उद्देश्य जनता की भलाई, समानता, और न्याय सुनिश्चित करना होता है।

कर्ज में डूबना, और अंत में उसकी मृत्यु, यह सब इस बात का प्रतीक है कि समाज में गरीब किसान के लिए कोई न्याय नहीं है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में आदर्श राज्यः

भारतीय संदर्भ में आदर्श राज्य की संकल्पना का प्रमुख उदाहरण रामराज्य है, जिसका उल्लेख श्री रामचरित मानस और अन्य पुराणों में मिलता है। रामराज्य का अर्थ एक ऐसी शासन व्यवस्था से है जहाँः

1. धर्म का पालन होता है और हर व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन करता है।

2. न्याय की सर्वोच्चता होती है और शासक अपने व्यक्तिगत लाभ से ऊपर उठकर जनहित में निर्णय लेते हैं।

3. प्रजा समानता, न्याय और सुरक्षा का अनुभव करती है, और शासक प्रजा के कल्याण के प्रति संवेदनशील होते हैं।

4. समाज में शांति, सुख, और समृद्धि का वातावरण होता है, और कोई भी शोषित या उपेक्षित नहीं होता।नैतिकता और मूल्यों का पतन

रामराज्य की विशेषताएँः

1. नैतिकता और धर्म का पालनः रामराज्य में राजा राम स्वयं धर्म का पालन करते हैं और प्रजा को भी धर्म पर आधारित जीवन जीने के लिए प्रेरित करते हैं।

2. न्यायपूर्ण शासनः शासक के निर्णय सभी के लिए समान होते हैं, चाहे वह कोई भी जाति, वर्ग या लिंग का हो। राजा का मुख्य कर्तव्य यह सुनिश्चित करना होता है कि राज्य में कोई अन्याय न हो।

3. प्रजा का कल्याणः रामराज्य में शासन का मुख्य उद्देश्य जनता का कल्याण होता है। यहाँ व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं, बल्कि समाज और राज्य की समृद्धि और स्थिरता पर ध्यान दिया जाता है।

4. समानता और सुरक्षाः समाज में हर व्यक्ति को समान अधिकार प्राप्त होते हैं, और राज्य सभी नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

5. अहिंसा और शांतिः राज्य में हिंसा का स्थान नहीं होता, और सभी नागरिक शांतिपूर्ण जीवन जीते हैं।

पश्चिमी परिप्रेक्ष्य में आदर्श राज्यः

पश्चिमी राजनीतिक विचारों में प्लेटो की ''जेम त्मचनइसपब'' (गणराज्य) आदर्श राज्य की संकल्पना प्रस्तुत करती है। प्लेटो के अनुसार आदर्श राज्य में शासक दार्शनिक राजा होते हैं, जो ज्ञान, नैतिकता और न्याय के आधार पर शासन करते हैं। उनका राज्य तीन वर्गों में विभाजित होता हैकृशासक, सैनिक, और श्रमिककृऔर हर वर्ग अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार राज्य की सेवा करता है।

1. न्यायः आदर्श राज्य में न्याय का पालन सर्वोपरि होता है। शासक निष्पक्षता से निर्णय लेते हैं और समाज में संतुलन बनाए रखते हैं।

2. शिक्षाः प्लेटो के आदर्श राज्य में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। शिक्षित और ज्ञानवान व्यक्ति ही राज्य का नेतृत्व करते हैं।

3. शासक का नैतिक कर्तव्यः प्लेटो के अनुसार, शासक को नैतिक और न्यायसंगत होना चाहिए और उसका उद्देश्य समाज की भलाई होनी चाहिए।गोदान का समापन और त्रासदी

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में आदर्श राज्यः

आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में आदर्श राज्य की संकल्पना में भी न्याय, समानता, और मानवाधिकारों का विशेष महत्व है। यह राज्य निम्नलिखित सिद्धांतों पर आधारित होता हैः

1. लोकतंत्रः जनता द्वारा चुनी गई सरकार जो उनकी आवश्यकताओं और अधिकारों का ध्यान रखे।

2. नागरिक अधिकारः सभी नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त हों, जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वतंत्रता, और सुरक्षा।

3. न्यायिक प्रणालीः स्वतंत्र और निष्पक्ष न्याय प्रणाली, जो सभी के लिए समान न्याय सुनिश्चित करे।

4. अधिकारों और कर्तव्यों का संतुलनः राज्य में नागरिकों के अधिकारों के साथ–साथ उनके कर्तव्यों पर भी ध्यान दिया जाता है।

आदर्श राज्य की संकल्पना एक ऐसी शासन व्यवस्था है जहाँ न्याय, समानता, और नैतिकता के सिद्धांतों का पालन होता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में रामराज्य और पश्चिमी परिप्रेक्ष्य में प्लेटो के गणराज्य इसका सर्वोत्तम उदाहरण हैं। आधुनिक समाज में भी आदर्श राज्य का सपना लोकतंत्र, न्याय, और नागरिक अधिकारों के माध्यम से साकार किया जा सकता है। आदर्श राज्य का उद्देश्य केवल शासन करना नहीं, बल्कि जनता की भलाई और समाज की प्रगति सुनिश्चित करना है।

श्री रामचरित मानस में आदर्श राज्य की अवधारणा

श्री रामचरित मानस में आदर्श राज्य की अवधारणा रामराज्य के रूप में प्रस्तुत की गई है, जो भारतीय समाज में न्याय, धर्म और शांति का आदर्श मॉडल माना जाता है। तुलसीदास ने रामराज्य को एक ऐसी शासन व्यवस्था के रूप में चित्रित किया है जहाँ शासक और प्रजा दोनों अपने–अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं, और राज्य में हर व्यक्ति सुखी और संतुष्ट रहता है। रामराज्य का वर्णन श्री रामचरित मानस के उत्तरकाण्ड में मिलता है, जहाँ भगवान राम के अयोध्या में राज्याभिषेक के बाद आदर्श शासन की स्थापना का विवरण दिया गया है।

रामराज्य की विशेषताएँः

1. धर्म और नैतिकता का पालनः रामराज्य का आधार धर्म और नैतिकता है। राजा राम धर्म के मार्ग पर चलते हुए अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हैं। उनका शासन धार्मिक और नैतिक सिद्धांतों पर आधारित है, जिसमें शासक को ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता है, और वह धर्म के अनुसार प्रजा का कल्याण करता है।

2. न्याय और समानताः रामराज्य में सभी के साथ समान व्यवहार होता है, चाहे वे किसी भी जाति, वर्ग या समुदाय के हों। न्याय सभी के लिए एक समान है और राजा राम व्यक्तिगत लाभ से ऊपर उठकर न्यायसंगत निर्णय लेते हैं। श्री रामचरित मानस में तुलसीदास ने रामराज्य को ऐसे राज्य के रूप में चित्रित किया है, जहाँ कोई अन्याय या भेदभाव नहीं होता।

3. प्रजा का सुख और समृद्धिः रामराज्य में प्रजा सुखी और समृद्ध होती है। राज्य में न तो कोई दुःखी होता है और न ही किसी को गरीबी या अभाव का सामना करना पड़ता है। हर व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए सुख और शांति से जीवन व्यतीत करता है। प्रजा की सभी आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाता है और उनका जीवन संतुलित और संपन्न होता है।

4. अपराध और भयमुक्त समाजः रामराज्य में कोई भी अपराध नहीं होता और न ही लोगों के मन में किसी प्रकार का भय या असुरक्षा होती है। तुलसीदास ने रामराज्य को अपराध और अन्याय से मुक्त राज्य के रूप में चित्रित किया है, जहाँ लोग ईमानदारी, सत्य और धर्म का पालन करते हैं।

5. शांति और सामाजिक सौहार्दः रामराज्य में शांति और सौहार्द का वातावरण होता है। समाज में कोई संघर्ष या विवाद नहीं होता और सभी लोग एक–दूसरे के प्रति सम्मान और प्रेम का भाव रखते हैं। राज्य में सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता का सम्मान किया जाता है और सभी समुदायों के बीच सामंजस्य होता है।

6. राजा का प्रजा के प्रति दायित्वः राजा राम अपने व्यक्तिगत सुख और लाभ से ऊपर उठकर प्रजा के कल्याण के लिए कार्य करते हैं। वे अपने राज्य की प्रजा को परिवार के सदस्य की तरह मानते हैं और उनके सुख–दुःख में सहभागी होते हैं। राम के शासन में राजा और प्रजा के बीच का संबंध प्रेम और विश्वास पर आधारित है।

रामराज्य के आदर्शः

श्री रामचरित मानस में रामराज्य केवल एक राजनीतिक शासन प्रणाली नहीं है, बल्कि यह एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था का भी प्रतीक है। इसमें समाज के सभी वर्गों के लिए न्याय, सुरक्षा और समृद्धि की व्यवस्था है। रामराज्य में केवल बाहरी शासन की बात नहीं की गई है, बल्कि आंतरिक नैतिकता और आत्म–संयम का भी महत्व दिया गया है। राज्य के हर नागरिक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह धर्म, सत्य और न्याय के मार्ग पर चले और अपने कर्तव्यों का पालन करे।

रामराज्य और आधुनिक संदर्भः

तुलसीदास द्वारा वर्णित रामराज्य न केवल प्राचीन काल का आदर्श राज्य है, बल्कि आज के समय में भी इसका महत्व है। यह एक ऐसी शासन व्यवस्था का आदर्श रूप है, जहाँ शासक जनता के कल्याण के प्रति समर्पित होता है और जनता भी अपने कर्तव्यों का पालन करती है। रामराज्य की अवधारणा आज के लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में भी प्रासंगिक है, जहाँ जनता के अधिकारों और न्याय की रक्षा के साथ–साथ नैतिकता और धर्म का पालन भी जरूरी है।

श्री रामचरित मानस में आदर्श राज्य की अवधारणा रामराज्य के रूप में प्रस्तुत की गई है, जो धर्म, न्याय, और समानता पर आधारित है। तुलसीदास ने राम के शासन को एक आदर्श राज्य के रूप में प्रस्तुत किया है, जहाँ राजा और प्रजा के बीच का संबंध सौहार्दपूर्ण और न्यायपूर्ण होता है। रामराज्य भारतीय समाज में एक ऐसे आदर्श शासन का प्रतीक है, जो आज भी एक आदर्श के रूप में देखा जाता है और जिसका उद्देश्य प्रजा का कल्याण और समृद्धि है।भ्रष्टाचार और समाज की विडंबनाएँ

निष्कर्ष

श्री रामचरित मानस में प्रस्तुत रामराज्य की संकल्पना भारतीय समाज के लिए एक आदर्श शासन मॉडल का प्रतिरूप है। इसमें नीति, धर्म और न्याय पर आधारित शासन व्यवस्था की रूपरेखा दी गई है, जो सभी नागरिकों के साथ समानता और न्याय का व्यवहार करती है। राम के चरित्र के माध्यम से तुलसीदास ने राजा के लिए आदर्श गुणों को स्पष्ट किया है, जिसमें धैर्य, संयम, न्यायप्रियता, और प्रजा के प्रति करुणा प्रमुख हैं। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि रामराज्य का दर्शन न केवल भारतीय संस्कृति और सभ्यता के आदर्शों को व्यक्त करता है, बल्कि यह आज के

युग में भी प्रासंगिक है। यह आदर्श राज्य की संकल्पना भारतीय जनमानस में सदियों से प्रेरणा का स्रोत रही है और आज भी एक उदाहरणात्मक शासन प्रणाली के रूप में स्वीकार की जाती है।

सन्दर्भ सूची :

1. तुलसीदास, ''श्री रामचरित मानस'', गीता प्रेस, गोरखपुर

2. नवल, ''रामचरितमानस का समाजशास्त्रीय अध्ययन'', राजकमल प्रकाशन

3. शर्मा, रामनिवास, ''भारतीय राजनीति और रामराज्य'', प्रभात प्रकाशन

4. पांडेय, सुधीर, ''आदर्श राज्य और रामचरितमानस'', साहित्य भारती1

5. मिश्रा, उमेश, ''तुलसीदास और उनका युग'', साहित्य अकादमी

6. गोस्वामी, रमेश, ''रामायण का शासन सिद्धांत'', मोतीलाल बानारसीदास

7. शास्त्री, विद्यानिवास, ''तुलसी साहित्य में राजनीति'', चौखंबा विद्या भवन